विषय : हमारी संस्कृति और खेती

# किसान - हमारा जीवन दाता ....

हमारा देश भारत है। हमारा देश भारत, आज परिवर्तन की राह में है। आज के दुनिया प्रतिदिन बदल रहे हैं। भारत भी हर दिन पुरोगति के मार्ग में चलता है। प्राचीन काल से ही हमारा भारत, दुनिया में सब के सबसे बड़े सांस्कृतिक राष्ट्र है। यहाँ की नदियाँ, पानी, फल, फूल, मानव सब ने हमारे देश के संस्कृति को बढ़नेवाले वस्तुनाएँ हैं। दक्षिण में भारत महा समुद्र, पूर्व में हिमालय महा पर्वताओं तथा, बंगाल महा समुद्र और अरेबियन महा समुद्र आदि विशेषताएँ भारत के चेहरा को चारुतार्थी बनता है। प्राचीन काल मानवों से आज के नवयुग तक भारत की संस्कृति

फैलाता है। ~~सिंध~~ पहले समय, महा नदी सिन्धु के किनारे रहने वालों को भारतवासियाँ इति कहलाता था। भारत की संस्कार का विशेषयुक्त उदाहरण है - सिन्धु -नदी - संस्कार। हमारे पूर्विक से ही ~~हम~~ भारतीय संस्कार प्रसिदध है। उस समय से ही लोग कृषि और भोजन के कार्य में श्रदद्धा करता हैं। पुरातन काल के लोगों ने खेती को परिपोषण करने के लिए भारत जाता हैं। तो हमें जानता है, भारत और किसान के बारे में होनेवाली अटूट बन्ध। प्राचीन काल से यहाँ तक ~~मानवों और~~ मानव और संस्कृति की क्षेत्र में परिवतन ~~होती है~~। हो रहा हैं। विज्ञान, खेती, सांस्कृतिक आदी के क्षेत्रों में आज भारत पहला श्रेणी में चलता हैं।

हमारा देश भारत भी प्रतिदिन संस्कृति और विकास के के रास्ता में चलता हैं। भारत इति वाक्य विश्व के सभी लोगों का जानता हैं। क्योंकि, हमारा संस्कृति ~~और~~ की विशेषताएँ हमारा देश को प्रसिद्ध करता हैं। सभी क्षेत्रों में आज भारत का शिर पहुँचता हैं। यह सभी बातों, हमारा संस्कार

से ही उत्भव हो रहा है। हमारा देश की स्वातंत्र सेनानियों की कठिन परिश्रम से हमें आज सुख और सुविधा से जी रहा है। उन्हें अपने खून और जीवन को तिरस्कार करके, नव युग के लिए स्वातंत्र देता था। अंग्रेज़ों के शासन में हमारा भारत गुलाम करता था। पर आज गुलाम के जंजडों को गुज़रकर हमें सुख से जीता है। यह सब हमारा स्वतंत्र विरों की परिश्रमों का फल हैं। उन्हें नवयुग के लिए प्रयत्न करता हैं। नई ज़माने के लिए प्रयत्न करता है। पर हम यहीं संस्कार को छोडकर दूसरे मार्ग में चलता हैं। महान विभूतियाँ के वचनों और जीवन को ~~भुलकर~~ हम गुज़र करते हैं। यहीं सब कार्य हमारा संस्कृति का रहित बातों हैं। नवीन युग के लोगों को ~~इसकी~~ संस्कृति के बारे में ज्ञान नहीं है। इसलिए उन्हें भारत की स्वातंत्र को गुज़रकर चलता हैं।

पूर्व काल से यहाँ तक भारत की सभी लोगों संस्कृतिक है। भारत दुनिया के सबसे बडे सांस्कृतिक देश हैं। गणतंत्र ~~स~~राष्ट्र में

सबसे बड़ी राष्ट्र भी भारत हैं। हमें जानना है कि प्राचीन काल से ही मानवों में कृषि को प्राधान्य देती है। खेती हमारा संस्कृति का एक अनमोल व्यवस्था था। प्राचीन समय में विज्ञान और नौकरी के क्षेत्र में भारत का स्थान बहुत नीचा था। उसी समय लोगों में विद्यालय था ~~लेकिन~~ पढने लिखने में निपुण नहीं था। वे कृषि के क्षेत्र में चलनेवाले थे। कृषि उन व्यक्तियों का भोजन था। कृषि या खेती से ही उन्हें प्रतिदिन चलता था। ~~य~~ तो खेती उस समय प्राणवायु था। काल बदलने समय जमाने भी बदल रहा हैं। आज कोई नहीं खेती को प्रोत्साहन करता हैं। क्योंकि आज वैविध्यों का काल हैं। प्रतिदिन दुनिया ~~में~~ परिवर्तन हो रहा है। इसलिए विज्ञान के क्षेत्र में भारत प्रथम स्थान में ~~है~~ हैं। आज के जमाने खेती के क्षेत्र में नहीं आता हैं। कृषि के क्षेत्र कभी कभी अच्छा और बुरा देता है। आज नौकरों से विशाल ~~[illegible]~~ दुनिया में लोग ~~बै~~ अनवरतम काम करता है और उपजीवन

का मार्ग दिखाता है। प्राचीन युग में खेती एक आश्वास था। पर उस समय में कृषि के पीछे जानेवाले लोगों को अहंकार या विद्वेष नहीं था। कभी पैसा के काम के में काम करता है और जीवन बिताना है। पर आज के लोगों में काम के बारे में अहंकार और विद्वेष है। नई नौकरियों के आने से लोग किसानों को पीड़ित करता है। अच्छे नौकरवालों ने किसानों से विद्वेष करता है। यही सब आज के जमाने का दुष्प्रवृत्तियाँ हैं। पर हमें मदद करेंगे, हमारा एकएक चावल या भोजन, किसानों का आत्मा है; उन व्यक्तियों के परिश्रम है। हमें इतनी बड़ी नौकरी मिलने पर भी किसान का स्थान महत्वपूर्ण है। किसानों के बिना हमें जी नहीं सकता। सभी व्यक्तियों का भोजन किसानों का परिश्रम है। आज अत्युक्त काम नौकरी में फँसकर लोगों ने खेती के क्षेत्र में नहीं आती है। आज खेती का क्षेत्र बहुत आयास से चलता है।

किसानों आज समाज में नहीं दिखाते हैं। चावल के लिए आज किसानों नहीं है। सभी व्यक्तियाँ बड़ी बड़ी नौकरियाँ करने तो, मानव के लिए क्यों चावल का उत्पादन करेगा? सभी नौकरियाँ को इसकि उन्नति है। इस दुनिया में कोई भी काम छोटा नहीं है।

केरल एक युग में चावल का उत्पादिक क्षेत्र था। पर आज केरल भी अन्य राज्यों से चावल पूछता है। यही सब कार्य हमारा विदेश से ही बनता है। तमिलनाडु और कर्नाटका, आज केरल को भोजन करता है? आज हमारा भारत के समाजों में क्या हो रहा है? क्यों किसानो खेती नहीं कर रहा है? कोई भी हमारा भोजनदाता किसानों का वचन सुनता है। आज किसानों ने आत्महत्या करता है। बहुत ही खर्च से बननेवाली कृषि स्थलों का नाश देखकर, वे कैसे जी सकेंगा? उन व्यक्तियों का हाहाकार क्यों सुनाएगा? कोई नहीं है। हमारा भोजनदाता

का हाहाकार कोई नहीं सुनता है।

हम सबको को मालुम मे हजार दिनों बीत हो चुकी, कार्षिक अन्दोलन। पंजाब के गरीबी किसानों से भारत सरकार ने कूरता किया था। यही सभी कार्यो में हमारा किसानों का रोदन हमें जानता है। गरीबी किसानों ने अपनी पूरी घर और पैसा खर्च करने से ही खेती कर रही हैं। पर महामारियों ने उस किसानों के अभिलाषों को छोडता है। निपा, कोविड 19, प्रलय आदी सबने ने किसान के जीवन को संघर्ष बनाता हैं। केन्द्र सरकार के किसान रहित मार्गों को देखकर कोई कई किसानों ने आत्महत्या किया। उनके जीवन के आश्रय नष्ट होने समय उनको कोई फायदा नहीं है और आत्महत्या करते हैं। हमारा ईश्वर है किसान। एकाएक किसान अपने दुःखों को छोडकर ही खेती करती हैं। पर समाज में उनके हालतों और विपताएँ सुनने के लिए कोई भी इस समाज में नहीं हैं। यही कार्य किसानों

का जीवन दुरितपुर्ण बनता है। पुराने समय से आज भी किसानों का हालत बहुत ही कठिन हैं।

खेती की क्षेत्र में ही नहीं विज्ञान के क्षेत्र में भी भारत अत्युन्नत स्थान था। ~~आज के~~ पुराने समय से आज तक विज्ञान के क्षेत्र में भारत का प्रथम स्थान हैं। हिंदी हमारा राष्ट्रभाषा है। हमें जानता है कि, हिंदी हमारे भारत में बडी तरह से उपयोग करनेवाली भाषा है। कई अन्य भाषाओं से जन्म हुए अतुल्य भाषा। यहाँ के कवियों को हमें जानता है। प्रेमचंद, मैथिली शरण गुप्त, शिवमंगल सिंह सुमन आदी महानों से पैत्रिक है हमारा भाषा हिंदी। संस्कृति की जमाने में हमारे भाषा हिंदी का स्थान महत्वपूर्ण हैं। तुलसीदास कबीर, रहीम, मीराभाई आदी के दोहा से नयी पाठों जाननेवाली लोग है - भारतवासियों। संस्कृतिक वाणी के अतुल्य दुनिया में हम जीता हैं। संस्कृतिक रूप में हमारा भारत को एक नया समाज को प्रतिक्षा करेंगे और संस्कृति की नई कलियाँ विकसन करने के लिए प्रतिक्षा करेगा और प्रयत्न करेंगे।